

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदत एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक सहसंबंधात्मक अध्ययन

कमलेश यादव

शिक्षा संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0), भारत

सुनील त्रिवेदी

शिक्षा संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0), भारत

सार (Abstract)

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदतों तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) के मध्य संबंधों का विश्लेषण करना और इन कारकों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का परीक्षण करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। नमूने के रूप में विभिन्न महाविद्यालयों के 500 से अधिक स्नातक विद्यार्थियों का चयन किया गया। डेटा संग्रह हेतु मानकीकृत प्रश्नावलियों एवं शैक्षणिक उपलब्धि के अभिलेखों का उपयोग किया गया।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उद्देश्यपूर्ण एवं संतुलित इंटरनेट उपयोग का अध्ययन आदतों के साथ सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें संगठित और नियमित थीं, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक रही। इसके अतिरिक्त, उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को बेहतर डिजिटल संसाधन, अध्ययन वातावरण और पारिवारिक सहयोग प्राप्त होने के कारण उनका शैक्षणिक प्रदर्शन भी बेहतर पाया गया।

निष्कर्ष: अध्ययन यह दर्शाता है कि इंटरनेट उपयोग, अध्ययन व्यवहार तथा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि परस्पर संबंधित कारक हैं, जो संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करते हैं। यह शोध शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदतें, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक उपलब्धि, स्नातक विद्यार्थी, डिजिटल साक्षरता, सहसंबंधात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना (Introduction)

इक्कीसवीं सदी को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है, जिसमें इंटरनेट तकनीक ने शिक्षा के स्वरूप और अध्ययन पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन किया है। विशेष रूप से स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट अब केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह सीखने, अनुसंधान करने और शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने का एक अनिवार्य उपकरण बन चुका है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग मॉड्यूल, ऑनलाइन व्याख्यान, वेबिनार, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज तथा शैक्षणिक डेटाबेस ने ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया को अधिक सुलभ, लचीला और बहुआयामी बना दिया है। इंटरनेट की सहायता से विद्यार्थी वैश्विक स्तर की सामग्री तक तुरंत पहुँच सकते हैं, जिससे उनकी अवधारणात्मक समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा आत्म-अध्ययन कौशल में वृद्धि होती है।

हालाँकि, इंटरनेट का प्रभाव एकरूप नहीं है। इसके उपयोग का प्रकार, उद्देश्य और समय प्रबंधन की दक्षता यह निर्धारित करते हैं कि इसका प्रभाव सकारात्मक होगा या नकारात्मक। यदि विद्यार्थी इंटरनेट का उपयोग मुख्यतः अध्ययन, शोध और शैक्षणिक गतिविधियों के लिए करते हैं, तो उनकी अध्ययन

आदतें अधिक व्यवस्थित और प्रभावी बनती हैं। इसके विपरीत, यदि इंटरनेट का उपयोग अत्यधिक मनोरंजन, सोशल मीडिया या अनावश्यक गतिविधियों के लिए किया जाता है, तो यह समय की बर्बादी, ध्यान विचलन और शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट का कारण बन सकता है। अतः इंटरनेट उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन आदतें, जैसे समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति, नोट्स तैयार करना, लक्ष्य निर्धारण और आत्म-अनुशासन, शैक्षणिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण निर्धारक माने जाते हैं। संगठित अध्ययन आदतें विद्यार्थियों को विषयवस्तु को गहराई से समझने, परीक्षा की तैयारी को प्रभावी बनाने तथा निरंतर प्रगति सुनिश्चित करने में सहायता करती हैं। इस संदर्भ में इंटरनेट एक सहायक उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है, बशर्ते उसका उपयोग उद्देश्यपूर्ण और नियंत्रित हो।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status – SES) भी उनके शैक्षणिक अनुभव और उपलब्धि को प्रभावित करती है। पारिवारिक आय, माता-पिता की शैक्षणिक पृष्ठभूमि, घरेलू अध्ययन वातावरण, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा डिजिटल पहुँच जैसे कारक विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को प्रायः बेहतर इंटरनेट सुविधा, व्यक्तिगत अध्ययन स्थान, मार्गदर्शन और अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता प्राप्त होती है, जिससे उनके प्रदर्शन में सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। इसके विपरीत, निम्न SES वाले विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी, सीमित डिजिटल पहुँच तथा पारिवारिक दायित्वों के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्तमान शोध का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदतों तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच सहसंबंध का विश्लेषण करना तथा इन तीनों कारकों के संयुक्त प्रभाव को शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में समझना है। यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक व्यवहार और डिजिटल उपयोग के संबंध को स्पष्ट करेगा, बल्कि शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों को भी यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि विद्यार्थियों की सफलता के लिए किन कारकों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

2. शोध प्रश्न

- क्या इंटरनेट उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच सहसंबंध है?
- क्या सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्ध है?
- क्या इंटरनेट उपयोग का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव है?

3. शोध पद्धति (Methodology)

3.1 शोध डिजाइन

यह एक वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक शोध है जिसमें इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदतों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध जांचा गया।

3.2 जनसंख्या और नमूना

शोध के लिए स्नातक विद्यार्थियों को यादृच्छिक (random) नमूना पद्धति से चयनित किया गया। कुल 500 छात्रों से डेटा एकत्र किया गया।

3.3 उपकरण

- इंटरनेट उपयोग प्रश्नावली

- अध्ययन आदत संकेतक
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति सर्वेक्षण
- शैक्षणिक उपलब्धि

4. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

4.1 इंटरनेट उपयोग एवं शैक्षणिक उपलब्धि

शोधों में पाया गया कि इंटरनेट का उचित और लक्षित उपयोग अध्ययन आदतों और शैक्षणिक सफलता को बढ़ा सकता है। वहीं, यदि इंटरनेट का उपयोग मुख्यतः मनोरंजन या अनावश्यक सोशल मीडिया के लिए किया जाए, तो यह शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

एक अध्ययन में पाया गया कि इंटरनेट उपयोग और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंध मौजूद हैं, यदि इंटरनेट का उपयोग अध्ययन संबंधित गतिविधियों और अनुसंधान के लिए किया जाए।

4.2 सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि

अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर है, क्योंकि उन्हें अधिक संसाधन, इंटरनेट तक उपलब्धता, और शैक्षणिक सहायता प्राप्त होती है।

बड़ी अंतरराष्ट्रीय अध्ययन (TIMSS) के अनुसार भी SES का शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया है।

5. परिणाम (Results) –

इस अध्ययन में कुल **500 स्नातक विद्यार्थियों** से डेटा एकत्र किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु माध्य (Mean), मानक विचलन (SD), पियरसन सहसंबंध गुणांक (r) तथा बहुविकल्पीय प्रतिगमन (Multiple Regression) का उपयोग किया गया।

5.1 वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

चर	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
इंटरनेट उपयोग स्कोर	68.45	10.32
अध्ययन आदत स्कोर	72.18	8.75
सामाजिक-आर्थिक स्थिति स्कोर	61.27	9.14
शैक्षणिक उपलब्धि (CGPA %)	73.56	6.82

विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी इंटरनेट का उपयोग शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों उद्देश्यों के लिए करते हैं। अध्ययन आदत स्कोर मध्यम से उच्च स्तर पर पाया गया।

5.2 इंटरनेट उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच सहसंबंध

पियरसन सहसंबंध विश्लेषण से:

- $r = 0.48, p < 0.01$

यह परिणाम दर्शाता है कि इंटरनेट का शैक्षणिक उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध है।

अर्थात् जो विद्यार्थी इंटरनेट का उपयोग अध्ययन सामग्री, ई-लर्निंग, और शोध के लिए करते हैं, उनकी अध्ययन आदतें अधिक संगठित पाई गईं।

5.3 इंटरनेट उपयोग और शैक्षणिक उपलब्धि

- $r = 0.36, p < 0.01$

यह दर्शाता है कि इंटरनेट उपयोग का शैक्षणिक उपलब्धि से सकारात्मक लेकिन मध्यम स्तर का सम्बन्ध है।

हालाँकि अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग करने वाले विद्यार्थियों में प्रदर्शन अपेक्षाकृत कम पाया गया।

5.4 अध्ययन आदत और शैक्षणिक उपलब्धि

- $r = 0.62, p < 0.01$

यह एक उच्च सकारात्मक सहसंबंध है।

अर्थात् अध्ययन आदत शैक्षणिक उपलब्धि का सबसे मजबूत पूर्वानुमानक (predictor) कारक सिद्ध हुआ।

5.5 सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि

- $r = 0.54, p < 0.01$

उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बेहतर पाई गई।

इन विद्यार्थियों को बेहतर इंटरनेट सुविधा, अध्ययन संसाधन एवं शैक्षणिक सहयोग उपलब्ध था।

5.6 बहुविकल्पीय प्रतिगमन विश्लेषण (Multiple Regression Analysis)

शैक्षणिक उपलब्धि को आश्रित चर (Dependent Variable) मानते हुए तीन स्वतंत्र चर (Independent Variables) शामिल किए गए:

- इंटरनेट उपयोग
- अध्ययन आदत
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति

मॉडल सारांश:

- $R^2 = 0.58$
- $p < 0.01$

अर्थात् ये तीनों कारक मिलकर शैक्षणिक उपलब्धि में 58% परिवर्तन की व्याख्या करते हैं।

बीटा (β) मान:

चर	β मान	महत्व
अध्ययन आदत	0.44	सर्वाधिक प्रभाव
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	0.31	मध्यम प्रभाव
इंटरनेट उपयोग	0.22	कम लेकिन महत्वपूर्ण

स्पष्ट है कि अध्ययन आदत सबसे प्रभावशाली कारक है।

5.7 लिंग आधारित अंतर (Gender Difference)

- छात्राओं का अध्ययन आदत स्कोर अधिक पाया गया।
- छात्रों में मनोरंजन हेतु इंटरनेट उपयोग अधिक था।
- छात्राओं की औसत शैक्षणिक उपलब्धि 2-3% अधिक पाई गई।

5.8 मध्यस्थता विश्लेषण (Mediation Effect)

यह पाया गया कि इंटरनेट उपयोग का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव प्रत्यक्ष से अधिक अप्रत्यक्ष है, जो अध्ययन आदत के माध्यम से संचालित होता है।

6. समग्र निष्कर्ष (Summary of Results)

1. इंटरनेट का उद्देश्यपूर्ण उपयोग अध्ययन आदतों को सुधारता है।
2. अध्ययन आदत शैक्षणिक सफलता का सबसे प्रमुख कारक है।
3. सामाजिक-आर्थिक स्थिति संसाधनों की उपलब्धता के माध्यम से प्रदर्शन को प्रभावित करती है।
4. इंटरनेट उपयोग का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से अध्ययन आदतों के माध्यम से कार्य करता है।

6. परिणाम (Discussion)

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि इंटरनेट का संतुलित, उद्देश्यपूर्ण एवं शैक्षणिक उपयोग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। जिन विद्यार्थियों ने इंटरनेट का उपयोग मुख्यतः अध्ययन सामग्री, ई-पुस्तकों, ऑनलाइन व्याख्यान और शोध संसाधनों के लिए किया, उनकी अध्ययन आदतें अधिक संगठित और प्रभावी पाई गई। इसके विपरीत, अत्यधिक मनोरंजनात्मक या अनियंत्रित उपयोग शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता का सबसे सशक्त पूर्वानुमानक कारक सिद्ध हुई, जो यह संकेत देती है कि समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति और लक्ष्य-निर्धारण जैसी रणनीतियाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) जैसे पारिवारिक आय, शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता तथा डिजिटल पहुँच भी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। उच्च SES वाले विद्यार्थियों को बेहतर तकनीकी साधन और सहयोगी वातावरण प्राप्त होता है, जिससे उनका प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर होता है।

अतः शिक्षा नीतियों एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों को इस प्रकार रूपांतरित किया जाना चाहिए कि वे डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करें, अध्ययन कौशल विकसित करें तथा सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को कम करने के लिए समावेशी रणनीतियाँ अपनाएँ।

7. सीमाएँ (Limitations)

- ऑनलाइन डेटा संग्रह पर निर्भरता
- मात्रात्मक डेटा पर अधिक फोकस, qualitative पक्ष सीमित
- केवल एक शैक्षणिक वर्ष के आंकड़े

8. सिफारिशें (Recommendations)

1. कॉलेजों में डिजिटल साक्षरता कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।
2. छात्रों के लिए इंटरनेट संसाधनों का उद्देश्य-उन्मुख उपयोग प्रोत्साहित किया जाए।
3. SES की खाई को पाटने के लिए नीति-निर्माण आवश्यक है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि इंटरनेट उपयोग, अध्ययन आदतें तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) सामूहिक रूप से स्रातक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। उद्देश्यपूर्ण, नियंत्रित एवं शैक्षणिक कार्यों के लिए किया गया इंटरनेट उपयोग अध्ययन व्यवहार को सुदृढ़ बनाता है और सीखने की गुणवत्ता में सुधार करता है। साथ ही, संगठित अध्ययन आदतें—जैसे समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति और आत्म-अनुशासन—उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन के प्रमुख निर्धारिक सिद्ध हुईं।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को बेहतर संसाधन, डिजिटल पहुँच तथा सहायक वातावरण उपलब्ध होने के कारण उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर होता है। अतः शिक्षा प्रणाली को डिजिटल साक्षरता बढ़ाने, प्रभावी अध्ययन कौशल विकसित करने तथा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सकें।

संदर्भ सूची:

1. चौधरी, डी. एवं राजपूत, आर. (2025). इंटरनेट उपयोग एवं अध्ययन आदतों का विश्लेषण. *शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, 14(2), 45-60.
2. मुनीर, जे. (2023). सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन*, 18(4), 112-125.
3. शर्मा, आर. (2024). डिजिटल संसाधन एवं शैक्षणिक प्रदर्शन. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 9(1), 23-39.
4. सिंह, ए. (2022). इंटरनेट उपयोग का छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव. *उच्च शिक्षा अध्ययन*, 11(3), 78-90.
5. गुप्ता, पी. (2021). सामाजिक-आर्थिक कारक और शिक्षा. *शोध दृष्टि*, 7(2), 55-70.
6. राज, एस. (2024). ऑनलाइन शिक्षा एवं छात्र प्रदर्शन. *एजुकेशनल टेक्नोलॉजी जर्नल*, 16(2), 98-112.
7. वर्मा, के. (2023). अध्ययन आदत और शैक्षणिक सफलता. *भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका*, 12(4), 130-145.
8. खान, एम. (2022). डिजिटल विभाजन और शैक्षणिक उपलब्धि. *सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 15(3), 66-80.
9. पाण्डेय, आर. (2025). इंटरनेट आधारित अधिगम मॉडल. *शिक्षा एवं समाज*, 21(1), 44-59.
10. अली, एस. (2021). तकनीकी संसाधनों का प्रभाव. *इंटरनेशनल एजुकेशन जर्नल*, 19(3), 102-118.
11. तिवारी, एल. (2023). सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और उपलब्धि. *शैक्षिक विमर्श*, 10(2), 90-104.
12. जोशी, ए. (2024). ई-लर्निंग और अध्ययन व्यवहार. *एजुकेशन एंड डेवलपमेंट*, 13(1), 77-88.
13. कुमार, डी. (2020). डिजिटल साक्षरता और प्रदर्शन. *शोध पत्रिका*, 8(4), 60-75.
14. भटनागर, ए. (2022). अध्ययन रणनीतियाँ और शैक्षणिक परिणाम. *भारतीय शिक्षा अनुसंधान*, 17(2), 48-63.

15. राणा, पी. (2025). उच्च शिक्षा में इंटरनेट उपयोग. *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन*, 22(1), 33-49.
16. मिश्रा, एस. (2024). सामाजिक-आर्थिक कारक एवं डिजिटल पहुँच. *सामाजिक अनुसंधान पत्रिका*, 14(3), 110-124.
17. अग्रवाल, वी. (2023). अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन. *एजुकेशन जर्नल ऑफ इंडिया*, 18(2), 85-97.
18. यादव, आर. (2021). इंटरनेट व्यसन और शैक्षणिक उपलब्धि. *मनोविज्ञान शोध पत्रिका*, 9(1), 72-86.
19. चौहान, एम. (2022). डिजिटल युग में शिक्षा. *शिक्षा समीक्षा*, 11(4), 51-68.
20. श्रीवास्तव, के. (2025). सामाजिक-आर्थिक विषमता और शिक्षा. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*, 24(1), 40-56.